IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 2, April 2022
Impact Factor: 6.252

माल्थस के जनसंख्या वृद्धि सिद्धांत की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ. सुमन सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चरखारी, जनपद, महोबा, (उ० प्र०)
drsumansinghs@gmail.com

Abstract

जनसंख्या किसी भी राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय विकास का प्रमुख आधार है। जनसंख्या वृद्धि और संसाधनों के मध्य संतुलन बनाए रखना आज विश्व के सामने एक बड़ी चुनौती है। 18वीं शताब्दी में थॉमस रॉबर्ट माल्थस ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ An Essay on the Principle of Population (1798) में यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि जनसंख्या ज्यामितीय (Geometric) अनुपात में बढ़ती है, जबकि खाद्य उत्पादन अंकगणितीय (Arithmetic) अनुपात में बढ़ता है। फलस्वरूप एक समय ऐसा आता है जब जनसंख्या संसाधनों से अधिक हो जाती है और समाज को अकाल, महामारी, बेरोजगारी तथा निर्धनता जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यद्यपि औद्योगिक क्रांति, वैज्ञानिक प्रगति एवं हरित क्रांति के कारण माल्थस की कई भविष्यवाणियाँ पूर्णतः सत्य सिद्ध नहीं हुईं, फिर भी पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन, जल संकट तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के संदर्भ में उनका सिद्धांत आज भी महत्वपूर्ण माना जाता है। इस शोध-पत्र में माल्थस के सिद्धांत, उसकी आलोचनाओं तथा वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: माल्थस, जनसंख्या वृद्धि, संसाधन, पर्यावरण, खाद्य सुरक्षा, सतत विकास, जीवन निर्वाह, संतानोत्पत्ति ज्यामितीय, अंकगणितीय, ब्रह्मचर्य।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in